International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 39-40

डॉ0 कैलाश चन्द शर्मा 'शंकी' के उपन्यास 'अंधेरी रातों के ऑसू' में राजनैतिक चेतना

सुमन कुमारी

शोधकर्त्री, हिन्दी पीएच0डी0, सिंघानिया यूनिवर्सिटी, पचेरी बड़ी, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

''सर्वे सुखिनः संतु सर्वे संतु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा व्याच्शददुखावाप्नुयात।।''[1]

उपनिषद् के उक्त चिंतन क्यों प्राप्त करने के लिए मनुष्य ने एक निश्चित संविदा के अनुसार जीवनयापन शुरू किया है और इस प्रकार राज्य और राजनीति की उत्पत्ति हुई। साहित्य, समाज और राजनीति इन तीनों की उत्पत्ति के मूल में मनुष्य ही है। अरस्तु के अनुसार– ''मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है।''[2] ये बात अरस्तु के समय जितनी प्रासंगिक थी, आज के युग में उससे भी कहीं ज्यादा प्रासंगिक है। आज का मनुष्य राजनीति से एकात्म होता जा रहा है जिसकी छाया साहित्य, विशेषकर उपन्यास साहित्य में देखी जा सकती है। समाज साहित्य को प्रभावित करता है और राजनीति से प्रभावित होती है। अतः समाज और साहित्य राजनीति तीनों अन्तः संबंधित है। कुछ लोगों का मत इससे भिन्न हो सकता है, वे कह सकते हैं कि साहित्य में बस 'सत्यम, शिवम्, सुन्दरम्' या आदर्श अपनाकर ही साहित्य का सही विकास हो सकता है और इसलिए राजनीति को साहित्य से अलग ही रखना चाहिए। आज के संघर्षपूर्ण युग में यह मूर्खतापूर्ण सा ही है। फॉक्स कहते हैं, ''उपन्यास सिर्फ कथात्मक गद्य नहीं है। यह मानव जीवन का गद्य तथा समग्र मनुष्य को लेकर उसको अभिव्यक्त करने के प्रयास की पहली कला है।''[3] इस संदर्भ में डॉ0 गोपालराम का वक्तव्य भी उल्लेखनीय है, ''राजनीतिक घटनाओं का भी उस देश के साहित्य पर तुरन्त या बाद में, प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव पड़ता ही है। उपन्यास में यह प्रभाव सर्वाधिक दिखाई पड़ता है, क्योंकि यथार्थ से संलग्ना ही उसकी पहचान है।''[4]

आधुनिक साहित्य पर राजनीतिक घटनाओं की गहरी छाप है, जिसका अनुसरण डॉ0 शंकी ने अपने उपन्यास 'अधेरी रातों के ऑसू' में किया है। प्रस्तुत उपन्यास एक ऐसे व्यक्ति की जीवनी का कथानक है, जिसने जिंदगी के सभी रिश्तों और संबंधों को सहृदयता एवं निश्छलता से निभाया है। 'दयाल' नाम के उस व्यक्ति ने इस समाज को बहुत कुछ संस्कारों के साथ अपनी संस्कृति को नयी दिशा प्रदान की मगर वह अपने साथ क्या रख पाया। उसने तो पं0 फूलचन्द शर्मा 'निडर' जैसे पवित्र आत्मा वाले इन्सानों के संसर्ग में रहकर समाज को कुछ देना ही सीखा था, लेना नहीं। कौत्सव को गर्व था अपने पिता जी के आदर्शों एवं सिद्वान्तों पर और उनका पुत्र होने पर। परन्तु उनकी विदाई के दर्द की पीड़ा को सहन करना बड़ा ही मुश्किल हो रहा था। जिसे उसने समय और पेशेंस के हाथों सौंप दिया था। जीवन में अपने पिता की बनाई हुई उन राहों पर बढ़ने का निर्णय कर लिया था जो सामाजिक परम्पराओं को सात्विकता से निभाकर समाज को नयी सजगता और चेतना प्रदान कराने वाली पीढ़ियों को रिश्ते–नाते और संबंधों की आशानुरूप निभाने का संकल्प उत्पन्न करें।

उपन्यास की मानव जीवन को अभिव्यक्त करने की विद्या है, इस बात की पुष्टि यत्र–तत्र सर्वत्र मिलती है, लेकिन जीवन की वास्तविक आलोचना 'राजनीतिक उपन्यास' के माध्यम से संभव है। डॉ0 कैलाश चन्द शर्मा 'शंकी' एक अनूठी प्रतिभा के धनी हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों में सभी तत्वों का निर्वहण किया है। 'अंधेरी रातों के ऑसू' नामक उपन्यास सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक व आधुनिकता से ओत–प्रोत संगतपूर्ण कृति है। वास्तव में आवश्यकता की पूर्ति के संबंध को विवेक एवं विश्वास से जीने वाले इन्सान की जिन्दगी की कार्यशैली का रिफलेक्शन आज भी समाज में सहयोगी साधना के रूप में देखा जा सकता है। जो श्रद्वा और विश्वास के साथ मानवीय आचरणों को जोड़ता है।

शहर की जनता सुबह–सुबह जलसे की तैयारी में मग्न थी। उन्हें आप पर विश्वास था कि वे जलसे को सफल बना लेंगे। परन्तु किसी द्वारा पुलिस को जलसे के बारे में पता चल गया तो सरदार जुलम सिंह ने पुलिस को तैयार किया और जुलूस से पहले ही वहॉ पहुंचकर अचानक निहत्थी जनता पर लाठियों द्वारा अपने जुलम का प्रदर्शन किया। जनता को ऐसा कोई अन्देशा नहीं था। क्योंकि उनका जुलूस तो साधारण सा था। कोई क्रान्तिकारी नहीं, केवल अपने विचारों द्वारा सरकार की गलत नीतियों का और प्रान्तों पर किए जा रहे जुल्म का विरोध करना था। परन्तु जुल्म सिंह ने जुलूस को एक क्रान्ति में बदल दिया है। लोगों ने पुलिस की लाठियॉ अपने सीनों पर झेली और बिना परवाह किए आगे बढ़ते गए। मगर पुलिस अपनी औंछी हरकतों से बाज नहीं आई। जुलूस कॉलेज के आगे से गुजर रहा था। कॉलेज के लड़कों से पुलिस का अत्याचार न देखा गया। प्रजातन्त्र की आड़ में प्रजा पर ही खुलेआम लाठीचार्ज किया, जबकि उनका कोई कसूर नहीं, वे तो महज अपने भाईयों से अलग नहीं होना चाहते थे और यह सरकार उनको अलग करने में कोई कसर न रख रही थी। कॉलेज वाले लड़कों ने जुलूस को वहीं रूकवा लिया और एक लड़के ने जो कि कॉलेज का लीडर कहलाता था, ऊॅची तेज और साफ आवाज में कहा–

''हमें खुशी है कि आप लोगों के इस उत्साह और लगन के साथ अपना कार्य करने पर, दुख तो इस बात का है कि प्रजा होकर भी प्रजातन्त्र में आप लोग जालिम सरकार की लाठियॉ खाओ। जबकि आप निहत्थे हो, कुछ भी नहीं कर रहे हो।''[5] 'अंधेरी रातों के ऑसू' उपन्यास में आम जनता और सरकार के बीच की तना–तनी का माहौल है। सरफरोशी की यह लड़ाई ही उनका काम खत्म कर सकती है। यह लड़ाई हिंसा के खिलाफ और अहिंसा की है। हो सकता है ये जालिम सरकार के रिश्वतखोर पिटठू हम पर गोलियॉ चलाए। मगर हमें अपने प्राणों की आहुति देकर भी इनका मुकाबला करना है।

''अफसोस तो इस बात का है कि अहिंसा को मानने वाले पुजारी ही अहिंसा की आड़ में हिंसा करें तो, भक्तों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि ऐसे पुजारी को पुजारी का नाम न देकर अत्चारी सिंह कहना ही उचित है। आखिर हम भी इन्सा है।''[6]

पुलिस ने प्रजातन्त्र को खजाना तन्त्र और रिश्वत तन्त्र में बदल दिया है। आज समाज की राजनीति इतनी गन्दी होने को चली है कि देश के टुकड़े होते जा रहे हैं। भाई–भाईयों में सास–बहुओं में, बाप–बेटा, भाई–बहनों में आपसी फूट डाल कर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने वालों ने समाज व राष्ट्र को टुकड़ों में बॉटने की

सोच रखी है।

जब फायरिंग का रूख तेज हो गया, लोग घायल होकर गिरने लगे तो कॉलेज छात्रों ने घायलों को हस्पताल पहुँचाना शुरू कर दिया जिसे देख जालिम जुलम सिंह ने कहा – ''जो भी घायलों को हस्पताल पहुँचाएगा वह भी मारा जाएगा। अपनी जिन्दगी को प्यारी जान इस काम को कोई न करे, तो ही ज्ञानता सिद्व होगी।''[7] वस्तुतः इस उपन्यास में पुलिस को आड़े हाथों लिया गया है। इसके साथ ही समाज को अतिरिक्त उत्साह के साथ प्रस्तुत किया गया। पुलिस ने अपने अपराध छुपाने के लिए बेकसूरों और गरीबों को पकड़कर जेलों में ठूँस रही थी। शहर की दोनों जेलों को लोगों से भर दिया गया। यह भी नहीं सोचा कि कितने मासूमों का भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा।

राजनीतिक परिस्थितियों के विश्लेषण में तो उपन्यासकारों को सफलता मिली है परन्तु उनसे निजात पाने का उपाय उनके पास भी नहीं है। अभी तक राजनीतिक संकट, मूल्यों का पतन, सामाजिक विघटन आदि का शोर होता रहता है। यदि मनुष्य को मनुष्य बना रहना है तो पूरी की पूरी समाज रचन और व्यवस्था को अहिंसक पद्वति से बदले बिना समस्याओं से छुटकारा पाने का रास्ता नहीं बचा है।

राजनीतिक पार्टियों में सफेदपोश के पीछे छिपे उनके काले कारनामे सामान्य जनता को बहला–फुसलाकर, चुनाव के समय वोट की राजनीति खेलते हैं। चुनाव में खड़े प्रत्याशी अपनी–अपनी तरकीबों से भोली–भाली जनता की ऑखों में पट्टियॉ बॉध रही थी। किस प्रत्याशी को वोट देना चाहिए। अपने–अपने पक्षों की सब बड़ाई कर रहे थे। मगर इस चुनाव के आसार कुछ और ही रंग ला रहे थे। अपने जुल्म, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार को चार चॉद लगाने में शहर में पहली बार बनी सफेद टोपियों वालों की सरकार ने बहुत उन्नति की। अपने बंगले बनाने, कारखाने खोलने में उन्होंने बहुत रिश्वत का पैसा कमाया। जनता को जितना दुख दे सकते थे दिया। इस पंचवर्षीय चुनाव में दो राजनीतिक पार्टियॉ भगवा और सफेद रंग की टोपियों के दो अलग–अलग चिह्न थे। प्रमुख प्रत्याशी समुंद्रदास गुप्ता और ईश्वरलाल शर्मा की तरफदारी बहुत हो रही थी। समुंद्रदास गुप्ता पहले चुनाव में ही चुने गए थे। शहर की गरीब जनता ने उसका परीक्षण अच्छी प्रकार कर लिया था, ''किस तरह उन पर जुल्म ढ़ाया गया था। वह गरीबों के मतों से विजयी होने वाला उनकी ही रोटी छिनने लगा था। पॉच वर्षों में क्या–क्या नहीं किया। बुरा जितना कर सकता था किया। ऊपर से सफेद खद्दर के वस्त्र धारण करने वाले के अन्दर की कालिमा स्पष्ट झलक रही थी।''[8]

लेकिन गरीब जनता ने इस बार सोच–समझकर वोट देने का विचार कर लिया था। उनकी ऑखें खुल चुकी थी। जनता गुप्ता जी को सबक सिखाने को तैयार थी। आखिरकार वह दिन आ गया और जनता बड़ी खुशी से वोट डालने गई। समुंद्रदास गुप्ता ने भोली–भाली स्त्रियों को बहकाने की कोशिशें की। लोगों को चॉदी के सिक्कों से भी खरीदने की नाकामयाब कोशिशें की। मगर खरीद न सका। ''चालाक आदमियों ने उसके सिक्के भी हजम किए और मत के स्थान पर उसे भीगी जूतियॉ दिखाई।''[9]

वोट डालने के तीसरे दिन शाम को चुनाव परिणाम घोषित हो गया। भगवा रंग की टोपी वाले यानि ईश्वरलाल शर्मा को विजयी घोषित किया गया। प्रान्त में सफेद टोपी वाली पार्टी को फिर से बहुमत प्राप्त हो चुका था। गठजोड़ वाली सरकार जिससे प्रांत वासी उब चुके थे फिर वहीं सरकार बन गई।

''राजनीति तो बड़ा गंदा खेल है। यह तो जुए से भी बुरा है। आज का मन्त्री, जिसकी हर जगह इज्जत है कल उसे पूछने वाला कोई नहीं। प्रांत में जोड़–तोड़ की राजनीति का गन्दा खेल खेल रहे थे नेतागण।''[10]

चुनाव के दौरान विरोध करने वालों का अंजाम बुरा हुआ। गरीबों की रोटी छीन ली गई। कांग्रेसी शहरवासियों का कसूरदार मान रहे थे।

अन्ततः डॉ0 शंकी ने 'अंधेरी रातों के ऑसू' उपन्या समें समाज के समक्ष राजनीतिज्ञों और गरीब जनता का भोलापन का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है। आज हमारे समाज में सफेदपोश का इतना दबदबा हो चुका है कि उनको अच्छे–बुरे की कोई पहचान नहीं। सब अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं। आवश्यकता है तो समाज को जगाने की, उन्हें जागृत करने की जिसकी कसौटी पर डॉ0 शंकी द्वारा रचित यह उपन्यास खरा उतरता है। कैलाश जी ने अपने उपन्या समें समस्त समाज का आईना प्रस्तुत कर नवचेतना की अलख जगाई है। समाज में राजनीतिक तस्वीर कोई अच्छी तस्वीर नहीं थी। प्रान्त में शिक्षा, स्वास्थय व विकास आदि से सम्बन्धित कोई प्रयास नहीं किया जाता था। डॉ0 शंकी ने अपने कथा साहित्य में यथार्थ रूप में अनेकानेक कमियों को उजागर कर पाठक का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट किया है।

संदर्भ

1. उपनिषद्।
2. सं0 डॉ0 बसंत बसंल : शोधपथ – पृ096।
3. फॉक्स : शोधपथ पृ096।
4. सं0 डॉ0 बसंत बसंल : शोधपथ – पृ096।
5. डॉ0 कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' – अंधेरी रातों के ऑसू पृ06।
6. वहीं।
7. डॉ0 कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' – अंधेरी रातों के ऑसू पृ07।
8. डॉ0 कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' – अंधेरी रातों के ऑसू पृ063।
9. डॉ0 कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' – अंधेरी रातों के ऑसू पृ064।
10. वहीं।